17. तुलसी के पद

स्वाध्याय

तुलसीदासजी के मत से कौन पतितपावन है ?

- तुलसीदासजी के मत से उनके स्वामी श्रीराम पतितपावन है ।

भगवान ने हाथ करके किनका उद्धार किया ?

- भगवान ने हाथ करके पक्षी, मृग, बाध्य, पाषाण, वृक्ष और यवन का उद्धार किया ।

माया के प्रति विवश होकर कौन-कौन सोचते है ?

- देवता, राक्षस, मुनि, नाग, मनुष्य – ये सब माया के प्रति विवश होकर सोचते है ।

प्रभु दानी है, तो कवि क्या है ?

- प्रभु दानी है, तो कावि भिखारी है ।

कवि 'पापपुंजहारी' किसे कहती है ?

- कवि भगवान श्रीराम को 'पापपुंजहारी' कहते है ।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

तुलसीदासजी प्रभु के चरणो को छोड़कर कही और क्यो नही जाना चाहते है ?

- तुलसीदासजी के अनुसार प्रभु श्रीराम पतितपावन है | वे दीन-दु:खी जनों के प्रेमी है | उन्होने हठ करके दुष्टो का उद्धार किया है | पक्षी, मृग, व्याध, पाषाण, वृक्ष और यवन का उद्धार करने में भी उन्होने देर नही की | बाकी देवता, मुनि और मनुष्य आदि माया के वशीभूत है | उनसे संबंध जोड़ने का अर्थ नही है | श्रीराम जैसी दया और सामर्थ्य और किसी में नही है | इसलिए तुलसीदासजी अपने प्रभु के चरणो को छोड़कर और काही जाना नही चाहते |

तुलसीदास ने अपने और भगवान के बीच कौन-कौन से संबंध जोड़े है ? क्यो ?

- तुलसीदास किसी भी रूप में भगवान से जुड़े रहना चाहते है| इसलिए वे कहते है की भगवान दयालु है तो वह दीन अर्थात दया के पात्र है| यदि प्रभु दानी है, तो तुलसीदासजी भिखारी है | प्रभु पापो का नाश करते है, तो तुलसीदासजी जैसा कोई पापी नही | प्रभु अनाथों के नाथ है, तो तुलसीदासजी जैसा कोई अनाथ नही | यदि प्रभु दु:ख दूर करते है, तो तुलसीदासजी जैसा कोई दु:खी नही है | प्रभू ब्रहम है, तो तुलसीदास जीव है | प्रभु स्वामी है, तो तुलसीदासजी सेवक है, भगवान ही तुलसीदास से माता, पिता, गुरु, सखा आदि सबकुछ है |

- इस प्रकार तुलसीदास ने भगवान से अपने अनेक संबंध जोड़े है | इसका कारण यह है की वे किसी भी संबंध से भगवान की शरण पाना चाहते है |

'टोही मोही नाते अनेक, मानिए जो भावे' का भावार्थ स्पष्ट कीजिए |

- तुलसीदास ने भगवान से अपने अनेक नाते बताए है | वे भगवान से कहते है की इनमें से जो नाता आपको स्वीकार हो, उस नाते से मेरे से जुड़े रहे | तुलसी जानते है की जब तक भगवान से एक निश्चित नाता नही होता तब तक भक्ति करने में आनद नही आता | एक नाता जुड़ जाने से ही भक्ति में गहराई आती है | उससे भगवान को एक निश्चित सांबोधन से पुकारने में सरलता होती है और अपनत्व बढ़ाने में मदद मिलती है | इसलिए तुलसीदास भगवान से प्रार्थना करते है की वे उनसे कोई एक निश्चित नाता बनाकर उन्हे अपना ले |

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भावार्थ स्पष्ट कीजिए |

देव, दनुज, मुनि, नाग, मनुज, सब मायाबीबस बिचारे ||

तिनके हाथ दासतुलसी प्रभु, कहा अपनपौ हारे ||

- हे भगवान राम ! देवता, राक्षस, मुनि, हाथी, वृक्ष, यवन, देवता आदि सब माया के वशीभूत है | इनमें मुझ जैसों के प्रति अपनापन नही हो सकता | इसलिए इनसे किसी तरह की सहायता की आशा करना व्यर्थ है | है प्रभु, मयारहित केवल आप ही है | मुझ जैसे भक्तो का ख्याल केवल आप ही रख सकते है | इसलिए आपके सिवा मै और किसी की शरम में जाने की बात नही सोच सकता |

नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोंसो?

मो समान आरत नहि, आरतिहर तोसो॥

- तुलसी भगवान से कहते हैं कि जिनका संसार में कोई रक्षक नहीं है, उनकी रक्षा आप ही करते हैं। मेरे जैसा और कोई अनाथ नहीं है। इसलिए आपको ही मेरी रक्षा करनी होगी, मेरे समान कोई दु:खी नहीं है। अपने दु:ख दूर करने के लिए मैं आपको ही पुकारूँगा, क्योंकि आपके समान दुखियों के दु:ख हरनेवाला दूसरा कोई नहीं है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निम्नलिखित शब्दसमूह के लिए एक शब्द लिखिए :

(1) पापियों का उद्धार करनेवाला

(2) जिसकी रक्षा करनेवाला कोई नहीं हो

(1) पापोद्धारक (2) अनाथ

समानार्थी शब्द लिखिए :

1 अधम = नीच

2 दनुज = राक्षस

3 मनुज = मनुष्य

4 पातकी = पापी

5 आरत = दु:खी

6 चेरो = दास

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in